दयनीय होती गई। पुरुषों की अपेक्षा उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। शांग वंश के समय सम्राट स्त्रियों के प्रति सभ्य आचरण करते थे। लेकिन चाऊ साम्राज्य के काल में यह स्थिति अशिष्ट हो गयी। कन्या का जन्म अशुभ माना गया था। स्त्रियों के नि:सन्तान होने पर पुरुष उन्हें तलाक दे सकते थे। पर्दा प्रथा का भी व्यापक रूप से प्रचलन हो गया था। चीनी सभ्यता में स्त्रियाँ दो वर्गों में विभक्त थीं—पहला कुलीन वर्ग एवं दूसरा सामान्य वर्ग। कुलीन वर्ग की स्त्रियों को उचित शिक्षा, नृत्य व संगीत और शासन में भागीदारी मिलती थी। वहीं सामान्य स्त्रियाँ गृह कार्य के अलावा कृषि का कार्य करती थीं।

भोजन एवं रहन-सहन—प्राचीन चीनी समाज में अमीर वर्ग एवं गरीब वर्ग में भोजन और रहन-सहन भी वर्गों के आधार पर बँटा हुआ था। सम्पन्न लोग सुख-सुविधा के साथ भव्य भवनों में निवास करते थे और भोजन में माँस, मछली व उच्च प्रकार के व्यंजन का प्रयोग करते थे। अमीर वर्ग कांसे के बने पात्र में भोजन ग्रहण करते थे। वहीं दूसरी तरफ गरीब वर्ग के लोग मिट्टी एवं घास-फूस के बने मकानों में रहते थे और साधारण भोजन के साथ-साथ मोटे अनाज जैसे- ज्वार, बाजरा इत्यादि से बना हुआ भोजन ग्रहण करते थे। प्राचीन चीनी लोगों में वेशभूषा व आभूषण के प्रति आकर्षण था। प्रारम्भ में यह लोग जूट से बने हुए परिधानों को पहनते थे, परन्तु बाद में इन्होंने सूती वस्त्र भी पहनना आरम्भ कर दिया था। हाथी दाँत, सीपी, शंख इत्यादि द्वारा आभूषण बनाये जाते थे। स्त्रियाँ फूलों का उपयोग अपने शरीर को सुन्दर बनाने के लिए किया करती थीं। चीनी समाज में अनेक उत्सव और त्यौहार का प्रचलन था जो आमतौर पर उपयोगिता के आधार पर मनाये जाते थे, यथा-बसन्त ऋतु, कृषि इत्यादि। ये लोग त्योहारों पर आतिशबाजी भी करते थे। मनोरंजन हेतु संगीत-यन्त्रों का उपयोग किया जाता था। चीनीवासी ताश, नाटक व शतरंज इत्यादि के शौकीन थे।

आर्थिक व्यवस्था (Economic System)

कृषि—चीन की 'हुआंग हो' नदी घाटी का उर्वर क्षेत्र कृषि के लिए अत्यधिक उपयुक्त था। इसी वजह से कृषि कार्य इनके जीवन का मुख्य आधार बनी। प्राचीन चीनी समाज के लोग आमतौर पूजा-पाठ के उपरान्त फसलें बोते थे, क्योंकि उन्हें हमेशा बाढ़ व अत्यधिक वर्षा का डर रहता था। यहाँ बाजरा, ज्वार, धान, गेहू, जूट, चाय, साग-सब्जियाँ एवं फलों की खेती की जाती थी। सोयाबीन की खेती भी लोकप्रिय थी। शहतूत की खेती भी प्रचलित थी। इसके पत्तों पर रेशम के कीड़े पाले जाते थे। शहतूत की खेती करने का मूल कारण था कि यहाँ रेशम उद्योग का विशेष रूप से प्रचलन था। चीनी समाज में व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की कृषि व्यवस्था थी। समस्त भूमि का स्वामी सम्राट होता था। कृषि के लिए हल एवं बैल का उपयोग होता था। चीनी समाज में कृषि कर्म मुक्त वृद्धों एवं मूक बधिर व अशक्त के भरण-पोषण का दायित्व राज्य के ऊपर था। चाऊ शासकों ने कृषि उत्पादनों को बढ़ावा देने के लिए सराहनीय कार्य किये गये। इस दृष्टि से बाढ़ों को नियन्त्रित करने एवं सिंचाई की व्यवस्था सुधारने के लिए उल्लेखनीय प्रयत्न किये गये। बाढ़ के पश्चात् आई दलदली भूमि को सुखाना एवं नहरें खोदना भी सरकार के ही कार्य थे। राज्य के प्रयासों के फलस्वरूप चीन के निवासी एक वर्ष में दो से तीन फसलें उत्पादित कर लेते थे।

प्राचीन चीनी लोग पशुपालन का भी कार्य करते थे। सुअर, भेड़, गाय, बैल, भैंस, बकरी, हिरण एवं कुत्ते आदि पालतू पशु थे। अत: प्राचीन चीनी सभ्यता में पशुओं का प्रयोग कृषि कर्म, रथ चलाने, बोझा ढोने, खाल, ऊन एवं माँस इत्यादि में किया जाता था।

व्यापार व उद्योग—प्राचीन चीनी सभ्यता में व्यापार व उद्योग की दशा का वर्णन करना प्रासंगिक है। चीनीवासी प्रमुख रूप से रेशम के कपड़े के लिए, सूत कातना, कपड़े बुनना, मिट्टी के बर्तन व मूर्तियाँ बनाना, आभूषण, खिलौना बनाना एवं धातुओं के अस्त्र-शस्त्र बनाने के लिए प्रसिद्ध थे। सर्वप्रथम रेशम की खोज का श्रेय चीनी सभ्यता को ही दिया जाता है। मृद्भाण्ड बनाने की कला का भी अत्यधिक विकास हुआ। वज्रमणि को उत्कीर्ण करना भी चीनी समाज की विशेषता थी। वज्रमणि को संगीत पत्थर कहा जाता था। क्योंकि जब इनको अच्छी तरह से गढ़ लिया जाता था और इनके ऊपर चोट लगायी जाती थी तो इसमें से मधुर स्वर निकलता था। शांगकालीन हस्तकलाएँ पूर्णत: विकसित नहीं थीं। चीनी लोग कातने-बुनने की कला से परिचित थे। वे सीप एवं पत्थर के बटन का उपयोग करते थे। कांसे के बर्तन पर नक्काशी की जाती थी। सिलाई हेतु हड्डियों एवं कांसे की सुइयों का उपयोग किया जाता था। चीन में कागज का उद्योग भी प्रसिद्ध था। ध्यातव्य है कि

कागज का आविष्कार चीन ने ही किया था। चीनी लोग वृक्ष की छाल, पटुआ एवं रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों से कागज का निर्माण करते थे। प्राचीन चीनीवासी दर्पण बनाने की कला में प्रवीण थे। चीन में कांसे के दर्पणों में रेखागणितीय आकृतियाँ बनाई जाती थीं। प्राचीन चीन विश्व के साथ रेशम मार्ग के माध्यम से जुड़ा हुआ था। प्राचीन रेशम मार्ग 4000 मील लम्बा था। इसका नाम रेशम मार्ग इसलिए पड़ा क्योंकि इस मार्ग के द्वारा मुख्य रूप से रेशमी वस्त्रों का व्यापार किया जाता था। यह व्यापार चीन मार्ग से लेकर पूर्वी यूरोप तक विस्तारित था। इसका विस्तार हान वंश के शासन (206 ई. पू.-220 ई. पू.) के समय किया गया था। इस मार्ग ने व्यापार के अलावा सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भी अत्यधिक भूमिका का निर्वाहन किया।

प्राचीन चीनी सभ्यता का जब शेष विश्व से सम्पर्क हुआ था तो इसके परिणामस्वरूप चीन के व्यापार में काफी अधिक उन्नति हुई। चीनी व्यापार स्थल एवं जल दोनों मार्गों से होता था। चीन की दीवार को पार करके दो मुख्य सड़कों का निर्माण पश्चिमी देशों से व्यापार हेतु किया गया था। चीन का व्यापार मुख्य रूप से मिस्र, मेसोपोटामिया, ईरान, रोम तथा भारत के साथ होता था। चीनीवासी रेशम, मिट्टी के बर्तन, लोहे की वस्तुओं एवं अन्य दस्तकारी वस्तुओं का निर्यात करते थे। आयातित वस्तुओं में सोना-चाँदी, अफीम, सूत एवं हाथी दाँत इत्यादि थे। प्राचीन चीनी सभ्यता के शुरुआती काल में व्यापारिक लेन-देन वस्तु-विनिमय पर आधारित था। लेकिन कालान्तर में सिक्कों का इस्तेमाल आरम्भ हो गया था। ऐसा माना जाता है कि 5वीं सदी में चीन सोने एवं चाँदी के सिक्कों का प्रयोग करता था। कागज की खोज होने से कागजी मुद्रा भी प्रचलन में आ गयी।

धार्मिक जीवन (Religious Life)—प्राचीन चीनी लोगों का धार्मिक आधार व्यापक था। चीनी प्रकृति के उपासक थे। वे अस्त्र-शस्त्र और पूर्वजों की भी उपासना किया करते थे। छठी शताब्दी ई. पू. में धर्म के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर परिवर्तन आया। कन्फ्यूशियस, लाओत्से एवं महात्मा बुद्ध जैसे सुधारकों के धार्मिक व दार्शनिक विचारों ने चीनी धर्म को नया रूप प्रदान किया।

प्रकृति एवं पूर्वज पूजा—प्राचीन चीनी सभ्यता के लोग पृथ्वी एवं आकाश को स्त्री व पुरुष के रूप में पूजते थे। आकाश को यंग एवं पृथ्वी को पिंग कहा जाता था। चीन लोग शुरुआत में वायु, पर्वत, नदियाँ, सूर्य एवं वर्षा की भी पूजा किया करते थे। नववर्ष का उत्सव लगातार दो सप्ताह तक मनाया जाता था। चीनी समाज में पूर्वजों की भी पूजा का उल्लेख मिलता है। पूर्वजों की स्मृति में उत्सव, भोज व नृत्यगायन का आयोजन किया जाता था। चीनियों का मानना था कि व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसकी आत्मा वायुमण्डल से अपनी सन्तानों की मुसीबत के समय सहायता करती है। पितरों के लिए मन्दिर की स्थापना की जाती थी। दैवीय शक्तियों के भय से बचने के लिए चीनीवासी द्वारा सुगन्धित द्रव्य, धूप, दीप एवं बलि इत्यादि को चढ़ाया जाता था। चीनी लोग जादू-टोना एवं प्रेत-आत्माओं पर विश्वास करते थे। पूजा का उद्देश्य व्यावहारिक ज्यादा था। चीनी मान्यता के अनुसार मनुष्य द्वारा पुण्य कर्म करने से सौभाग्य, यश व लम्बी आयु की प्राप्ति होती है। वहीं पाप-कर्म करने से अपयश व अकाल मृत्यु आती है।

दर्शन—छठी शताब्दी ई. पू. का काल विश्व में दर्शन एवं नये सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के रूप में स्मरण किया जाता है। इस क्रान्तिकारी परिवर्तन का व्यापक प्रभाव चीन पर भी पड़ा। जहाँ कन्फ्यूशियस, लाओत्से एवं अन्य दार्शनिकों व सुधारवादियों का अवतरण हुआ।

कन्फ्यूशियस (Confuciues)

कन्फ्यूशियस प्राचीन चीन का एक दार्शनिक एवं महान सुधार था। इनका जन्म चीन में 551 ई. पू. में 'लू' प्रान्त (आधुनिक शान्तुंग) में हुआ था। उनका बचपन का नाम 'कुंग-तु-त्जे' था। इनके पिता एक सम्मानित परिवार से थे। इनकी माता 'येन' परिवार से सम्बन्धित थीं। बाल्यकाल में ही पिता की मृत्यु के बाद माता की देख-रेख में बड़े हुए। विवाह के पश्चात् इन्हें एक पुत्र एवं एक पुत्री भी हुई। परन्तु कुछ समय बाद इन्होंने पत्नी को तलाक दे दिया। कन्फ्यूशियस इतिहास एवं धार्मिक विषयों में रुचि रखते थे। तार्किक दृष्टि रखने के कारण इन्होंने सक्रिय होकर आनन्द की खोज हेतु चिन्तन किया। कन्फ्यूशियस के उपदेशों को 'कन्फ्यूशियसवाद' के नाम से जाना जाता है। छठी शताब्दी ई. पू. में इनके जन्म के समय चीन में चारों तरफ अव्यवस्था एवं अशान्ति फैली हुई थी तथा राजनीतिक व सामाजिक संस्थाएँ खण्डित हो रही थीं। इस वातावरण में कन्फ्यूशियस का मुख्य सरोकार इस अव्यवस्था से छुटकारा दिलाना एवं समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना करना था।

कन्फ्यूशियस द्वारा एक विद्यालय शुरू किया गया जिसमें वह इतिहास, सदाचार एवं काव्य प्रमुख रूप से पढ़ाते थे। विद्यालय में लगभग तीन हजार विद्यार्थी थे। उसकी सद्चरित्रता से प्रभावित होकर 'लू' प्रान्त के राजा ने उसे लू का गवर्नर बनाया। उसने अपराधों पर रोक लगायी और लोगों में एकता व समरसता लाने का प्रयास किया। परन्तु अनैतिकता का विरोध करने के कारण उन्हें पद छोड़ना पड़ा। वह अपने नैतिक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए एक आदर्श शासक की खोज की असफल कोशिश करते रहे और 479 ई. पू. में 'लू' प्रान्त में इनकी मृत्यु हो गयी। कन्फ्यूशियस के जीवन काल में उनके अनेक शिष्य बन चुके थे। लेकिन कई शताब्दियों पश्चात् हान राजवंश (206 ई. पू.-220 ई. पू.) ने कन्फ्यूशियस के उपदेशों को सरकारी मत के रूप में अपनाया जिससे कन्फ्यूशियसवाद का प्रभाव चारों तरफ प्रसारित हो गया। कन्फ्यूशियस की 305 कविताओं का संग्रह 'शी' नामक ग्रन्थ में किया गया है।

कन्फ्यूशियस की शिक्षाएँ—कन्फ्यूशियस अपनी सरल एवं उपयोगी शिक्षाओं के लिए चीनी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी शिक्षाएँ निम्न प्रकार हैं—

- शिक्षा चरित्र निर्माण का प्रमुख साधन है। समाज में शिक्षक का समुचित सम्मान होना चाहिए।
- कन्फ्यूशियसवाद के तहत सामाजिक व्यवस्था में छोटे-बड़े के भाव को स्वीकार किया गया था तथा आज्ञापालन और सत्ता के समक्ष समर्पण का उपदेश दिया था, जिसमें राजा एवं प्रजा के सम्बन्ध की तुलना पिता व पुत्र के सम्बन्ध के साथ की गयी थी।
- राजनीतिक सिद्धान्तों में कन्फ्यूशियस राजा को देवतुल्य मानता था। हालांकि अत्याचारी शासक को जन-विद्रोह से हटाये जाने की भी वकालत की। उसके अनुसार राज्य के अधिकारी एवं कर्मचारी धैर्यवान, निष्पक्ष, निडर एवं न्यायप्रिय होने चाहिए और जनता को भी कानून का ईमानदारी से पालन करना चाहिए।
- कन्फ्यूशियसवाद में व्यवस्था एवं व्यक्ति के सामाजिक तथा सार्वजनिक उत्तरदायित्वों पर बल दिया गया था। शाही राज्य को मजबूत बनाने हेतु यह सर्वाधिक उपयुक्त दर्शन था।
- एक व्यक्ति को अच्छे व्यवहार, विनम्रता, ईमानदारी जैसे गुणों को प्राप्त करना चाहिए। बच्चों एवं पत्नियों को क्रमशः अपने माता-पिता व पति को सम्मान देना चाहिए। दूसरों के लिए जीने वाला ही सच्चा मानव कहलाता है।
- कन्फ्यूशियसवाद में धार्मिक पाखण्डों व अन्धविश्वास से बचने तथा यथार्थवादी होने पर विशेष जोर दिया गया।
- कन्फ्यूशियसवाद के अनुसार 'तिन-येन' सर्वशक्तिमान शासक है। इसके अधीनस्थ अन्य देव हैं जो मनुष्य को प्रभावित करते हैं। स्वर्ण की पूजा करनी चाहिए। अपने पूर्वजों, पर्वतों व नदियों इत्यादि के प्रति सम्मान करना चाहिए। ईश्वर का विधान अनन्त है। सूर्य व चन्द्र शाश्वत हैं। ऋतुएँ अपने समय पर आती हैं। विश्व की सृष्टि होती रहती है। जो मनुष्य ईश्वर के विरुद्ध पाप करता है, उसके लिए प्रायश्चित करने का कोई भी स्थान नहीं है।

कन्फ्यूशियस की शिक्षा व नवीन सिद्धान्त केवल धार्मिक सिद्धान्त नहीं थे, बल्कि वे एक व्यक्ति के समस्त व्यक्तित्व के प्रतिबिम्ब थे। उनके उपदेश से समाज में स्थिरता उत्पन्न हुई एवं राज्य में सुव्यवस्था स्थापित की गयी। **बिलडूरेन्ट** के अनुसार, "कन्फ्यूशियस के दर्शन की सहायता से चीन ने सामूहिक जीवन विद्यालय तथा ज्ञान के प्रति जिज्ञासा और शान्त व स्थायी संस्कृति का विकास किया तथा इसी से चीनी सभ्यता को इतनी शक्ति प्राप्त हुई कि अनेक आक्रमणों का सामना करने के बावजूद भी जीवित रही और प्रत्येक आक्रमणकारी को परिवर्तित कर आत्मसात् कर सकी।" नैतिक उत्थान से जीवन को सुसंस्कृत व खुशहाल बनाने का कन्फ्यूशियस का ज्ञान वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है।

लाओत्से (Lao Tze/Laozi)—लाओत्से को प्राचीन चीनी सभ्यता का पहला सुधारक एवं दार्शनिक कहा जाता है। उनका जन्म 604 ई. पू. में हेनान प्रान्त के निर्धन परिवार में हुआ था। यह कन्फ्यूशियस का समकालीन था। अपनी मेहनत के बल पर वह चाऊ राज्य में अभिलेख संग्रहालयाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। राजनीतिक हस्तक्षेप से निराश होकर लाओत्से ने पद का त्याग कर दिया और साथ ही राज्य को छोड़ दिया। उनका मूल नाम